Namaz Padhne Ke Sawabat (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 247
Weekly Booklet : 247

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "फ़ैज़ाने नमाज़" की
एक क़िस्त मअ तरमीम व इज़ाफ़ा बनाम

नमाज़ पढ़ने के सवाबात

सफ़हात 21

नमाज़ के 25 फ़ज़ाइल 4
ज़मीन से दीनार निकालने वाला 8
दो हालतों के इलावा नमाज़ मुआफ़ नहीं 12
पचास का सवाब कमाइये 14

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **नमाज़ पढ़ने के सवाबात**

सिने त़बाअ़त : **1443** हि., **2022** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

नमाज़ पढ़ने के सवाबात

येह रिसाला (**नमाज़ पढ़ने के सवाबात**) शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़्मून किताब "फ़ैज़ाने नमाज़" सफ़हा 7 ता 22 से लिया गया है।

नमाज़ पढ़ने के सवाबात

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

मुस्तफ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **नमाज़** के बा'द ह़म्दो सना व दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले से फ़रमाया : "दुआ मांग क़बूल की जाएगी, सुवाल कर, दिया जाएगा।" (نسائی، ص220، حدیث:1281)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तक़रीबन 20 हज़ार नमाज़ें अदा फ़रमाईं

शबे मे'राज पांचों नमाज़ें फ़र्ज़ होने के बा'द हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ह़याते ज़ाहिरी (या'नी दुन्यवी ज़िन्दगी) के ग्यारह साल छे माह में तक़रीबन 20 हज़ार नमाज़ें अदा फ़रमाईं, (درمختار، 2/6 ماخوذا، وغیرہ) तक़रीबन 500 जुमुए अदा किये (मिरआतुल मनाजीह, 2/346) और ईद की 9 नमाज़ें पढ़ीं। (सीरते मुस्तफ़ा, स. 249, मुलख़्ख़सन) क़ुरआने करीम में नमाज़ का ज़िक्र सेंकड़ों जगह आया है।

ऐ ख़ुश नसीब आ़शिक़ाने नमाज़ ! मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : नमाज़े पंजगाना (या'नी पांच वक़्त की नमाज़ें) **अल्लाह** पाक की वोह ने'मते उ़ज़्मा है कि उस ने अपने करमे अ़ज़ीम से

ख़ास हम को अ़ता फ़रमाई हम से पहले किसी उम्मत को न मिली।

(फ़तावा रज़विय्या, 5/43)

नमाज़ किस पर फ़र्ज़ है ?

हर मुसल्मान आ़क़िल बालिग़ मर्द व औ़रत पर रोज़ाना पांच वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ है। इस की फ़र्ज़िय्यत (या'नी फ़र्ज़ होने) का इन्कार कुफ़्र है। जो जान बूझ कर एक नमाज़ तर्क करे वोह फ़ासिक़ सख़्त गुनाहगार व अ़ज़ाबे नार का हक़दार है।

जन्नत ऐ बे नमाज़ियो ! किस त़रह़ पाओगे ? नाराज़ रब हुवा तो जहन्नम में जाओगे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

नमाज़ हमारे लिये इन्आ़म है

सद करोड़ अफ़्सोस ! आज अक्सर मुसल्मानों को नमाज़ की बिल्कुल परवा नहीं रही, हमारी मस्जिदें नमाज़ियों से ख़ाली नज़र आती हैं। **अल्लाह** पाक ने नमाज़ फ़र्ज़ कर के हम पर यक़ीनन एह़साने अ़ज़ीम फ़रमाया है, हम थोड़ी सी कोशिश करें, नमाज़ पढ़ें तो **अल्लाह** करीम हमें बहुत सारा अज्रो सवाब इनायत फ़रमाता है।

"फ़र्ज़ नमाज़" के सात हुरूफ़ की निस्बत से नमाज़ के बारे में सात आयात

﴾1﴿ पारह 18 सूरतुल मुअमिनून की आयत 9, 10, 11 में इर्शाद होता है :

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۝۹ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ۝۱۰ الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝۱۱

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो अपनी नमाज़ों की निगह्बानी करते हैं। येही लोग वारिस हैं कि फ़िरदौस की मीरास पाएंगे, वोह उस में हमेशा रहेंगे।

﴿2﴾ **अल्लाह** पाक ने क़ुरआने करीम में जा बजा नमाज़ की ताकीद फ़रमाई है, पारह 16 सूरए طٰهٰ आयत 14 में इर्शाद होता है : ﴿وَ اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِیْ﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और मेरी याद के लिये नमाज़ क़ाइम रख।

﴿3﴾ और **अल्लाह** करीम पारह 5 सूरतुन्निसाअ आयत 103 में इर्शाद फ़रमाता है : ﴿اِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِیْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक नमाज़ मुसल्मानों पर वक़्त बांधा हुवा फ़र्ज़ है।

﴿4﴾ **अल्लाह** पाक पारह 12 सूरए हूद आयत 114 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَ اَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَیِ النَّهَارِ وَ زُلَفًا مِّنَ الَّیْلِ ؕ اِنَّ الْحَسَنٰتِ یُذْهِبْنَ السَّیِّاٰتِ ؕ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِیْنَ ۚ﴿۱۱۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और नमाज़ क़ाइम रखो दिन के दोनों कनारों और कुछ रात के हिस्सों में, बेशक नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं, येह नसीहत है नसीहत मानने वालों को।

﴿5﴾ रब्बे ग़फ़ूर पारह 18 सूरतुन्नूर आयत 56 में फ़रमाता है : ﴿وَ اَقِیْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتُوا الزَّكٰوةَ وَ اَطِیْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और नमाज़ बरपा रखो और ज़कात दो और रसूल की फ़रमां बरदारी करो इस उम्मीद पर कि तुम पर रहूम हो।

﴿6﴾ पाक परवर्दगार पारह 21 सूरतुल अ़न्कबूत आयत 45 में फ़रमाता है : ﴿اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَ الْمُنْكَرِ ؕ﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक नमाज़ मन्अ़ करती है बे हयाई और बुरी बात से।

﴿7﴾ **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त ने पारह 29 सूरतुल मआ़रिज आयत 34 और 35 में इर्शाद फ़रमाया :

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿۳۴﴾
اُولٰٓئِكَ فِيْ جَنّٰتٍ مُّكْرَمُوْنَ ﴿۳۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो अपनी नमाज़ की मुहाफ़ज़त करते हैं, येह हैं जिन का बाग़ों में ए'ज़ाज़ होगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

नमाज़ के मुख़्तलिफ़ 25 फ़ज़ाइल

❀ **अल्लाह** पाक की ख़ुशनूदी का सबब नमाज़ है (تنبیہ الغافلین، ص150) ❀ मक्की मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आंखों की ठन्डक नमाज़ है (سنن کبریٰ للنسائی، 5/280، حدیث:8888) ❀ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की सुन्नत नमाज़ है (تنبیہ الغافلین، ص151) ❀ नमाज़ अंधेरी क़ब्र का चराग़ है (تنبیہ الغافلین، ص151) ❀ नमाज़ अ़ज़ाबे क़ब्र से बचाती है (الزواجر، 1/295) ❀ नमाज़ क़ियामत की धूप में साया है (تنبیہ الغافلین، ص151) ❀ नमाज़ पुल सिरात के लिये आसानी है (تنبیہ الغافلین، ص151) ❀ नमाज़ नूर है (مسلم، ص140، حدیث:223) ❀ नमाज़ जन्नत की कुन्जी है (مسند امام احمد، 5/103، حدیث:14668) ❀ नमाज़ जहन्नम के अ़ज़ाब से बचाती है ❀ नमाज़ से रह़मत नाज़िल होती है ❀ **अल्लाह** पाक बरोज़े क़ियामत नमाज़ी से राज़ी होगा ❀ नमाज़ दीन का सुतून है (شعب الایمان، 3/39، حدیث:2807) ❀ नमाज़ से गुनाह मुआ़फ़ होते हैं (معجم کبیر، 6/250، حدیث:6125) ❀ नमाज़ दुआ़ओं की क़बूलिय्यत का सबब है (تنبیہ الغافلین، ص151) ❀ नमाज़ बीमारियों से बचाती है ❀ नमाज़ से बदन को राह़त मिलती है ❀ नमाज़ से रोज़ी में बरकत होती है ❀ नमाज़ बे ह़याई और बुरे कामों से बचाती है ❀ नमाज़ शैत़ान को ना पसन्द है (تنبیہ الغافلین، ص151) ❀ नमाज़ क़ब्र के अंधेरे में तन्हाई की साथी है (تنبیہ الغافلین، 151) ❀ नमाज़ नेकियों के पलड़े को

वज़्नी बना देती है (تنبیہ الغافلین،151) ❀ नमाज़ मोमिन की मे'राज है (مرقاۃ المفاتیح،1/55) ❀ नमाज़ का वक़्त पर अदा करना तमाम आ'माल से अफ़्ज़ल है (تنبیہ الغافلین،151) ❀ नमाज़ी के लिये सब से बड़ी ने'मत येह है कि उसे बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** पाक का दीदार होगा।

चोर ने जब नमाज़ पढ़ी (हिकायत)

हज़रते राबिआ बसरिय्या अ़दविय्या رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا के घर रात के वक़्त एक चोर दाख़िल हुवा, उस ने हर त़रफ़ तलाशी ली लेकिन सिवाए एक लोटे के कोई चीज़ न पाई। जब वोह जाने लगा तो आप ने फ़रमाया : अगर तुम चोर हो तो ख़ाली नहीं जाओगे। उस ने कहा : मुझे तो कोई शै नहीं मिली। फ़रमाया : "ऐ ग़रीब ! इस लोटे से वुज़ू कर के कमरे में दाख़िल हो जा और दो रक्अ़त नमाज़ अदा कर, यहां से कुछ न कुछ ले कर जाएगा।" उस ने वुज़ू किया और जब नमाज़ के लिये खड़ा हुवा तो हज़रते राबिआ अ़दविय्या رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا ने दुआ की : "ऐ मेरे प्यारे प्यारे **अल्लाह** ! येह शख़्स मेरे पास आया लेकिन इस को कुछ न मिला, अब मैं ने इसे तेरी बारगाह में खड़ा कर दिया है, इसे अपने फ़ज़्लो करम से महरूम न करना।" उस चोर को इबादत की ऐसी लज़्ज़त नसीब हुई कि रात के आख़िरी हिस्से तक वोह **नमाज़** में मश्ग़ूल रहा। सह़री के वक़्त आप उस के पास तशरीफ़ ले गईं तो वोह ह़ालते सज्दा में अपने नफ़्स को डांटते हुए कह रहा था : "ऐ नफ़्स ! जब मेरा रब्बे करीम मुझ से पूछेगा मेरी ना फ़रमानियां करते हुए तुझे ह़या न आई ! तू अगर्चे मेरी मख़्लूक़ से गुनाह छुपाता रहा, मगर अब गुनाहों की गठड़ी ले कर मेरी बारगाह में पेश है ! ऐ नफ़्स ! अगर रब्बुल इ़ज़्ज़त मुझे इ़ताब (या'नी मलामत) करेगा और

अपनी बारगाहे रह़मत से दूर कर देगा तो मैं क्या करूंगा ?'' जब वोह फ़ारिग़ हो गया तो आप ने पूछा : ऐ भाई ! रात कैसी गुज़री ? बोला : ''मैं आ़जिज़ी व इन्किसारी के साथ अपने रब्बे बारी की बारगाह में खड़ा रहा तो उस ने मेरा टेढ़ापन दुरुस्त कर दिया, मेरी मा'ज़िरत क़बूल फ़रमा ली और मेरे गुनाह बख़्श दिये और मुझे मेरे मक़्सद तक पहुंचा दिया।'' फिर वोह शख़्स चेहरे पर ह़ैरानी व परेशानी के आसार लिये चला गया। ह़ज़रते राबिआ़ बसरिय्या رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا ने बारगाहे इलाही में हाथ उठा कर अ़र्ज़ की : ऐ मेरे प्यारे प्यारे **अल्लाह** ! येह शख़्स तेरी बारगाह में एक घड़ी खड़ा हुवा तो तू ने इसे क़बूल कर लिया और मैं कब से तेरी बारगाह में खड़ी हूं, क्या तू ने मुझे भी क़बूल फ़रमा लिया है ? अचानक आप ने दिल के कानों से येह आवाज़ सुनी : ऐ राबिआ़ ! हम ने इसे तेरी ही वज्ह से क़बूल किया और तेरी ही वज्ह से अपनी नज़्दीकी इनायत फ़रमाई।

(अरौ़जुल फ़ाइक़, स. 159, मुलख़्ख़सन)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

निगाहे वली में वोह तासीर देखी *बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللهُ علٰی مُحَمَّد

अवक़ाते नमाज़ का ध्यान रखने की फ़ज़ीलत

हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है : ''अगर बन्दा वक़्त में नमाज़ क़ाइम रखे तो मेरे बन्दे का मेरे ज़िम्मए करम पर अ़ह्द है कि उसे अ़ज़ाब न दूं और बे ह़िसाब जन्नत में दाख़िल करूं।'' (الفردوس بماثور الخطاب، 3/171، حدیث:4455)

ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अह़बाब (या'नी दोस्तों) से फ़रमाया : अगर तुम चाहो तो मैं ज़रूर क़सम खाऊंगा फिर फ़रमाया : **अल्लाह** की क़सम ! जिस के सिवा कोई मा'बूद (या'नी इ़बादत के लाइक़) नहीं, बेशक **अल्लाह** पाक की बारगाह में सब बन्दों से ज़ियादा अ़ज़मत वाले लोग वोह हैं जो रात दिन सूरज और चांद का ध्यान रखते हैं। अह़बाब ने अ़र्ज़ किया : ऐ अबू दरदा ! क्या इस से मुअ़ज़्ज़िन मुराद हैं ? फ़रमाया : "बल्कि जो भी मुसल्मान नमाज़ के वक़्त का ख़याल रखता है।" (کتاب الثقات، 4/330، حدیث:4799)

तो नमाज़ नहीं होती....!

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! अभी आप ने नमाज़ों के अवक़ात का ख़याल रखने की फ़ज़ीलत सुनी, हर एक को नमाज़ों के वक़्तों का ख़याल रखना ज़रूरी है। बा'ज़ नमाज़ी इस की बिल्कुल परवा नहीं करते, यहां तक कि सूरज तुलूअ़ हो जाता, फ़ज्र का वक़्त निकल जाता है फिर भी नमाज़े फ़ज्र अदा कर रहे होते हैं ! ह़ालां कि नमाज़े फ़ज्र का सलाम फेरने से क़ब्ल अगर सूरज की एक किरन भी निकल आए तो नमाज़ नहीं होती। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "वक़्त पहचानना (या'नी नमाज़, रोज़े वग़ैरा के अवक़ात की मा'लूमात रखना) तो हर मुसल्मान पर फ़र्ज़े ऐ़न (या'नी हर आ़क़िल व बालिग़ मुसल्मान पर ज़रूरी) है।"

(फ़तावा रज़विय्या, 10/569)

अब अवक़ात की मा'लूमात ज़ियादा मुश्किल नहीं रही

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! आज कल तरक़्क़ी का दौर है, अब अवक़ात की मा'लूमात ज़ियादा मुश्किल नहीं रही, वक़्त मा'लूम करने

के लिये घड़ियां मौजूद हैं। पहले लोग सूरज, चांद और सितारे देख कर वक़्त मा'लूम करते थे। अब भी इन्हीं ज़राएअ़ से मा'लूम कर के तौक़ीत दान उ़लमा हमारी सहूलत के लिये अवक़ाते नमाज़ व सह़र व इफ़्तार का नक़्शा तय्यार करते हैं, और उ़मूमन हमारी मसाजिद में येह नक़्शे आवेज़ां भी होते हैं।[1]

ज़मीन से दीनार निकालने वाला नमाज़ी (ह़िकायत)

ह़ज़रते अबू बक्र बिन फ़ज़्ल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने जब इसरार कर के अपने एक रूमी दोस्त से इस्लाम लाने का सबब पूछा तो उस ने बयान किया : हमारे मुल्क पर मुसल्मानों का लश्कर ह़म्ला आवर हुवा, जंग हुई, कुछ लोग हमारे क़त्ल हुए और कुछ उन के। मैं ने अकेले दस मुसल्मानों को क़ैदी बना लिया। मुल्के रूम में मेरा बहुत बड़ा घर

---

1 ... اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, "दा'वते इस्लामी" के ज़ेरे एहतिमाम "मजलिसे तौक़ीत" गुज़श्ता कई सालों से आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ दुन्या भर के मुसल्मानों की दुरुस्त अवक़ाते नमाज़ व सम्ते क़िब्ला से मुतअ़ल्लिक़ रहनुमाई के लिये कोशां है। (ता दमे तह़रीर) दरजनों बड़े शहरों के निज़ामुल अवक़ात (TIME TABLE) शाएअ़ हो चुके जो "मक्तबतुल मदीना" की मुतअ़ल्लिक़ा शाख़ों से ह़ासिल किये जा सकते हैं। मज़ीद मुल्क व बैरूने मुल्क के कसीर शहरों के "निज़ामुल अवक़ात" की इशाअ़त का सिल्सिला जारी है। इन निज़ामुल अवक़ात में शहरों के फैलाव और बुलन्द इमारात का लिह़ाज़ रखने के साथ साथ आयिन्दा 26 सालों का मुम्किना फ़र्क़ भी शर्ई एह़तियात़ के साथ शामिल किया गया है। याद रहे कि हर साल अवक़ाते नमाज़ में कुछ फ़र्क़ आ जाता है जो हर चौथे साल तक़्रीबन दुरुस्त हो जाता है लिहाज़ा मज़ीद दुरुस्ती के लिये आयिन्दा 26 सालों का मुम्किना फ़र्क़ भी शर्ई एह़तियात़ के साथ शामिल किया गया नीज़ मजलिस के तह़्त तय्यार होने वाली मुख़्तलिफ़ मोबाइल एपलीकेशन्ज़, ऑन लाइन निज़ामुल अवक़ात के इ़लावा अवक़ातुस्सलात सॉफ़्टवेर के ज़रीए भी दुन्या भर के तक़्रीबन 27 लाख मक़ामात के लिये निज़ामुल अवक़ात व सम्ते क़िब्ला मा'लूम किये जा सकते हैं।

था, मैं ने उन सब को अपने ख़ादिमीन के सिपुर्द कर दिया। उन्हों ने उन को बेड़ियों (Chains) में जकड़ कर ख़च्चरों (Mules) पर सामान लादने के काम पर लगा दिया। एक दिन मैं ने उन क़ैदियों पर मुक़र्रर एक ख़ादिम को देखा कि उस ने एक क़ैदी से कुछ लिया और उस को नमाज़ पढ़ने के लिये छोड़ दिया, मैं ने उस ख़ादिम को पकड़ कर मारा और पूछा : बताओ तुम इस क़ैदी से क्या लेते हो ? तो उस ने बताया : येह हर नमाज़ के वक़्त मुझे एक दीनार (या'नी सोने का सिक्का) देता है। मैं ने पूछा : क्या इस के पास दीनार हैं ? तो उस ने बताया : नहीं, मगर जब येह नमाज़ से फ़ारिग़ होता है तो अपना हाथ ज़मीन पर मारता है और उस से एक दीनार निकाल कर मुझे दे देता है ! (ख़ादिम का बयान सुन कर) मुझे शौक़ हुवा कि मैं उस की हक़ीक़त जानूं। लिहाज़ा जब दूसरा दिन हुवा तो मैं उस ख़ादिम का यूनीफ़ॉर्म पहन कर उस की जगह खड़ा हो गया। जब ज़ोहर का वक़्त हुवा तो उस ने मुझे इशारा किया कि मुझे नमाज़ पढ़ने दे तो मैं तुझे एक दीनार दूंगा। मैं ने कहा : मैं दो दीनार से कम नहीं लूंगा। उस ने कहा : ठीक है। मैं ने उसे खोल दिया, उस ने नमाज़ पढ़ी। जब फ़ारिग़ हुवा तो मैं ने देखा कि उस ने अपना हाथ ज़मीन पर मारा और वहां से नए दो दीनार निकाल कर मुझे दे दिये। जब अ़स्र का वक़्त हुवा तो उस ने मुझे पहली मरतबा की त़रह़ इशारा किया। मैं ने उसे इशारा किया कि मैं पांच दीनार से कम नहीं लूंगा। उस ने मान लिया। फिर जब मग़रिब का वक़्त हुवा तो ह़स्बे मा'मूल मुझे इशारा किया तो मैं ने कहा : मैं दस दीनार से कम नहीं लूंगा। उस ने मेरी बात मान ली। और जब **नमाज़** से फ़ारिग़ हुवा तो ज़मीन से दस दीनार निकाल कर मुझे दे दिये और फिर

जब इ़शा की नमाज़ का वक़्त हुवा तो ह़स्बे आ़दत उस ने मुझे इशारा किया, मैं ने कहा : मैं बीस दीनार से कम नहीं लूंगा। फिर भी उस ने मेरी बात तस्लीम कर ली और नमाज़ से फ़राग़त पा कर उस ने ज़मीन से बीस दीनार निकाले और मुझे थमा कर कहने लगा : जो मांगना है मांगो ! मेरा मौला बहुत ग़नी व करीम है, मैं उस से जो मांगूंगा वोह अ़त़ा करेगा। उस का येह मुआ़मला देख कर मुझे यक़ीन हो गया कि येह वलिय्युल्लाह है, मुझ पर उस का रो'ब त़ारी हो गया और मैं ने उस को ज़न्जीरों से आज़ाद कर दिया और वोह रात मैं ने रो कर गुज़ारी। जब सुब्ह़ हुई तो मैं ने उसे बुला कर उस की ता'ज़ीमो तक्रीम की, उसे अपना पसन्दीदा नया लिबास पहनाया और इख़्तियार दिया कि वोह चाहे तो हमारे शह्र में इ़ज़्ज़त वाले मकान या मह़ल में रहे और चाहे तो अपने शह्र चला जाए। उस ने अपने शह्र जाना पसन्द किया। मैं ने एक ख़च्चर मंगवाया और ज़ादे राह (या'नी रास्ते के अख़्राजात) दे कर उसे ख़च्चर पर ख़ुद सुवार किया। उस ने मुझे दुआ़ दी : "**अल्लाह** पाक अपने पसन्दीदा दीन पर तेरा ख़ातिमा फ़रमाए।" उस का येह जुम्ला मुकम्मल न हुवा था कि मेरे दिल में दीने इस्लाम की मह़ब्बत घर कर गई, फिर मैं ने अपने दस ग़ुलाम उस के हमराह भेजे। उन्हें हुक्म दिया कि इसे निहायत एह़तिराम के साथ ले जाओ। फिर उस को एक दवात (Ink-pot) और काग़ज़ दिया और एक निशानी मुक़र्रर कर ली कि जब वोह ब ह़िफ़ाज़त तमाम अपने मक़ाम पर पहुंच जाए तो वोह निशानी लिख कर मेरी त़रफ़ भेज दे। हमारे और उस के शह्र के दरमियान पांच दिन का फ़ासिला था। जब छटा दिन आया तो मेरे ख़ुद्दाम मेरे पास आए, उन के पास रुक़्आ़ भी था जिस में उस का

ख़त़ और वोह अ़लामत मौजूद थी। मैं ने अपने ग़ुलामों से जल्दी पहुंचने का सबब दरयाफ़्त किया तो उन्हों ने बताया कि जब हम उस के साथ यहां से निकले तो हम किसी थकावट और मशक़्क़त के बिग़ैर घड़ी भर में वहां पहुंच गए, लेकिन वापसी पर वोही सफ़र पांच दिनों में तै़ हुवा। उन की येह बात सुनते ही मैं ने पढ़ा : اَشْهَدُاَنْ لَّآاِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ وَاَشْهَدُاَنَّ مُحَمَّدًارَّسُوْلُ اللّٰهِ وَاَنَّ دِيْنَ الْاِسْلَامِ حَقٌّ (तरजमा : मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं गवाही देता हूं कि यक़ीनन ह़ज़रत मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** पाक के रसूल हैं और बेशक दीने इस्लाम ह़क़ है) फिर मैं रूम से निकल कर मुसल्मानों के शह़र आ गया। (الروض الفائق، ص95)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

क्यूंकर न मेरे काम बनें ग़ैब से ह़सन *बन्दा भी हूं तो कैसे बड़े कारसाज़ का*

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

अरकाने इस्लाम पांच हैं

सह़ाबी इब्ने सह़ाबी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है, सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि इस्लाम की बुन्याद पांच चीज़ों पर है : ﴿1﴾ इस बात की गवाही देना कि **अल्लाह** पाक के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं और मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के ख़ास बन्दे और रसूल हैं और ﴿2﴾ नमाज़ क़ाइम करना ﴿3﴾ ज़कात देना ﴿4﴾ ह़ज करना और ﴿5﴾ रमज़ान के रोज़े रखना। (بخاری، 1/14، حدیث:8)

दो ह़ालतों के इ़लावा नमाज़ मुआ़फ़ नहीं

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! कलिमए इस्लाम के बा'द इस्लाम का सब से बड़ा रुक्न नमाज़ है, येह हर आ़क़िल बालिग़ मुसल्मान मर्द व औ़रत पर फ़र्ज़े ऐ़न (या'नी जिस का अदा करना हर आ़क़िल व बालिग़ मुसल्मान पर ज़रूरी (जन्नती ज़ेवर, स. 209)) है कि दो सूरतों के इ़लावा किसी ह़ाल में भी मुआ़फ़ नहीं। ﴾1﴿ जुनून या बेहोशी मुसल्सल इतनी लम्बी हो जाए कि छे नमाज़ों का वक़्त गुज़र जाए मगर होश न आए तो येह नमाज़ें मुआ़फ़ हो जाएंगी और इन की क़ज़ा भी लाज़िम नहीं ﴾2﴿ औ़रत को ह़ैज़ या निफ़ास आ जाए तो ऐसी ह़ालत में नमाज़ मुआ़फ़ हो जाती है। इन दो सूरतों के इ़लावा किसी ह़ालत में भी नमाज़ मुआ़फ़ नहीं, बीमारी अगर्चे कितनी ही शदीद हो मगर नमाज़ मुआ़फ़ नहीं, अगर खड़े होने की त़ाक़त न हो तो बैठ कर नमाज़ पढ़े, अगर रुकूअ़ व सज्दा न कर सकता हो तो सर के इशारे से रुकूअ़ व सज्दा करे, अगर बैठ कर भी नमाज़ नहीं पढ़ सकता तो लेट कर इशारे से पढ़े, अगर लेट कर सर से भी इशारा न कर सकता हो तो इस वक़्त भी नमाज़ मुआ़फ़ नहीं होगी, अलबत्ता वोह फ़िलह़ाल नमाज़ न पढ़े जब तन्दुरुस्त हो जाए तो उन नमाज़ों की क़ज़ा पढ़ेगा। हां, अगर छे नमाज़ों का वक़्त इसी ह़ालत में गुज़र जाए तो इन की क़ज़ा साक़ित् (या'नी मुआ़फ़) हो जाएगी। ऐ़न जंग में भी मुजाहिद नमाज़ पढ़ेगा, अगर घोड़े पर सुवार हो और उतरने की मोहलत न हो तो मुम्किन होने की सूरत में घोड़े पर बैठे बैठे इशारे से नमाज़ पढ़ेगा, इसी त़रह़ घमसान की लड़ाई में भी मुम्किन होने की सूरत में इशारे से रुकूअ़ व सज्दा कर के नमाज़ अदा करेगा। क़ुरआने करीम में जिस क़दर

नमाज़ के ताकीदी अह़काम और नमाज़ छोड़ने पर सख़्त वईदें आई हैं इतनी ताकीद और वईद किसी दूसरी इबादत के लिये नहीं आई। नमाज़ की फ़र्ज़िय्यत का इन्कार करने वाला बल्कि इस की फ़र्ज़िय्यत में शक करने वाला भी काफ़िर और इस्लाम से ख़ारिज है और जान बूझ कर एक वक़्त की नमाज़ भी छोड़ने वाला फ़ासिक़, सख़्त गुनाहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है। अफ़्सोस ! आज कल बा'ज़ मुसल्मान जो नमाज़ी कहलाते हैं उन का येह ह़ाल है कि ज़रा उन्हें बुख़ार या दर्दे सर हुवा तो नमाज़ छोड़ देते हैं, उन्हें मा'लूम हो जाना चाहिये कि जब तक इशारे से भी नमाज़ पढ़ने की ताक़त रखते हैं, नमाज़ पढ़नी होगी वरना अ़ज़ाबे नार के ह़क़दार होंगे। **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त हम सब को रोज़ाना पांचों वक़्त बा जमाअ़त नमाज़ अदा करने की सआ़दत इनायत फ़रमाए।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बारहा नमाज़ की अहम्मिय्यत पर ज़ोर दिया है और हमारी तरग़ीब के लिये बे शुमार फ़ज़ाइल भी बयान फ़रमाए हैं। चुनान्चे पढ़िये और झूमिये :

उम्मते मुस्त़फ़ा से मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की हमदर्दी

शहन्शाहे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : **अल्लाह** पाक ने मेरी उम्मत पर पचास (50) नमाज़ें फ़र्ज़ फ़रमाई थीं। जब मैं मूसा (عَلَیْہِ السَّلَام) के पास लौट कर आया तो मूसा (عَلَیْہِ السَّلَام) ने दरयाफ़्त किया कि **अल्लाह** पाक ने आप (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की उम्मत पर क्या फ़र्ज़ किया है ? मैं ने उन्हें बताया कि **अल्लाह** पाक ने मुझ पर पचास नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं। तो आप कहने लगे : अपने रब के पास लौट कर जाइये, आप

(صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की उम्मत इतनी ताक़त नहीं रखती। मैं लौट कर **अल्लाह** पाक के पास गया, उन (या'नी 50) से कुछ हिस्सा कम कर दिया गया। जब फिर मूसा (عَلَیْہِ السَّلَام) के पास लौट कर आया, तो उन्हों ने मुझे फिर लौटा दिया। **अल्लाह** पाक ने फ़रमाया : अच्छा पांच (5) हैं और पचास (50) के क़ाइम मक़ाम हैं क्यूं कि हमारे क़ौल में तब्दीली नहीं होती। मैं मूसा (عَلَیْہِ السَّلَام) के पास लौट कर आया। उन्हों ने कहा : फिर **अल्लाह** पाक के पास लौट जाइये। मैं ने जवाब दिया मुझे तो अपने रब से शर्म महसूस होने लगी है।

(ابن ماجہ، 2/166، حدیث:1399)

पांच नमाज़ें पढ़िये पचास का सवाब कमाइये

हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर मे'राज की रात पचास नमाज़ें फ़र्ज़ की गईं, फिर कम की गईं, यहां तक कि पांच रह गईं, फिर आवाज़ दी गई : ऐ महबूब (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ! हमारी बात नहीं बदलती और आप (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के लिये इन पांच के बदले में पचास का सवाब है। (ترمذی، 1/254، حدیث:213)

मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने मदद फ़रमाई

ऐ आशिक़ाने रसूल ! देखा आप ने ! हज़रते मूसा कलीमुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام ने अपनी वफ़ाते ज़ाहिरी के ढाई हज़ार बरस बा'द उम्मते मुस्तफ़ा की येह मदद फ़रमाई कि शबे मे'राज में पचास नमाज़ों के बजाए पांच करा दीं। **अल्लाह** पाक जानता था कि नमाज़ें पांच रहेंगी मगर पचास मुक़र्रर फ़रमा कर फिर दो प्यारों के ज़रीए से पांच मुक़र्रर फ़रमाईं। यहां दिलचस्प बात येह है कि जो लोग शैतान के वस्वसों में आ कर इन्तिक़ाल कर जाने वालों की मदद और तआवुन का इन्कार कर देते

हैं वोह भी 50 नहीं पांच नमाज़ें ही पढ़ते हैं ह़ालां कि पांच नमाज़ों के तक़र्रुर (या'नी मुक़र्रर (Fix) किये जाने) में यक़ीनी त़ौर पर ग़ैरुल्लाह (या'नी **अल्लाह** के सिवा) की और वोह भी इन्तिक़ाल के बा'द की जाने वाली मदद शामिल है।

खेलों का शौक़ीन

अपने आप को नमाज़ों का पाबन्द बनाने, शैत़ानी वस्वसों से बचाने और ईमान की ह़िफ़ाज़त की सोच पाने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, ''दा'वते इस्लामी'' के दीनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये। आइये ! एक मदनी बहार सुनते हैं : एक इस्लामी भाई आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, ''दा'वते इस्लामी'' के मुश्कबार मदनी माह़ोल से वाबस्ता होने से पहले गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे। सारा दिन क्रिकेट खेलना और घन्टों टीवी के सामने बैठ कर फ़िल्में ड्रामे देखना उन का मह़बूब मश्ग़ला था। مَعَاذَاللّٰه नमाज़ पढ़ना तो दर किनार कोई नमाज़ पढ़ने का कहता तो उस की बात मानने की बजाए कभी तो उस पर बरस पड़ते। वालिदैन के साथ बद कलामी से पेश आते और बहन भाइयों के साथ बुरा सुलूक किया करते। उन के मह़ल्ले के कुछ इस्लामी भाई जो दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से वाबस्ता थे, वोह इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए उन को नमाज़ पढ़ने और दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की दा'वत देते रहते मगर वोह हर बार टाल देते। फिर एक इस्लामी भाई ने उन का ज़ेह्न बनाया कि आप कम अज़ कम मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) में ही शिर्कत कर लिया करें

इस की बरकत से क़ुरआने करीम तो दुरुस्त पढ़ना सीख जाएंगे। इस्लामी भाई की बात उन की समझ में आ गई और वोह अपने अ़लाक़े की मस्जिद में मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) में पढ़ने लगे। वहां का माहोल उन्हें अच्छा लगने लगा और वोह बा क़ाइदगी से आने लगे। **अल्लाह** पाक का उन पर फ़ज़्लो करम हुवा कि उन्हों ने मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) की बरकत से नमाज़ें पढ़ना शुरूअ़ कर दीं और बे शुमार सुन्नतें और दीनी मसाइल सीखने का मौक़अ़ भी हाथ आया। कुछ ही अ़र्सा गुज़रने के बा'द वोही दीनी माहोल जिस से वोह दूर भागते थे, उसी के हो कर रह गए।

तुम्हें लुत्फ़ आ जाएगा ज़िन्दगी का क़रीब आ के देखो ज़रा मदनी माहोल

(वसाइले बख़्शिश स. 646)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

सब्र व नमाज़ से मदद चाहो

दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना के तरजमे वाले क़ुरआन, "**कन्ज़ुल ईमान**" सफ़ह़ा 17 पर पारह 1 सूरतुल बक़रह की आयत 45 में इर्शाद होता है : ﴿وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِؕ وَ اِنَّهَا لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِيْنَ ۙ﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और सब्र और नमाज़ से मदद चाहो, और बेशक नमाज़ ज़रूर भारी है मगर उन पर जो दिल से मेरी त़रफ़ झुकते हैं।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस आयत के तह़्त लिखते हैं : या'नी अपनी ह़ाजतों में सब्र और नमाज़ से मदद चाहो (मज़ीद फ़रमाते हैं :) इस आयत में मुसीबत के वक़्त नमाज़ के साथ इस्तिआ़नत (या'नी मदद

चाहने) की ता'लीम भी फ़रमाई, क्यूं कि वोह इबादते बदनिय्या व नफ़्सानिय्या की जामेअ़ है और उस में क़ुर्बे इलाही ह़ासिल होता है। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अहम उमूर के पेश आने पर मश्ग़ूले नमाज़ हो जाते थे, इस आयत में येह भी बताया गया कि मोमिनीने सादिक़ीन (या'नी सच्चे मुसल्मानों) के सिवा औरों पर **नमाज़** गिरां (या'नी भारी) है।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 17)

जब बारगाहे रिसालत में भूक की ह़ाज़िरी होती.....

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस आयते मुबारका के तह़्त लिखते हैं : यहां "صَلٰوۃ" से या तो पंजगाना (या'नी पांच वक़्त की) नमाज़ मुराद है या ख़ास नमाज़। या'नी पंजगाना नमाज़ों के ज़रीए मदद ह़ासिल करना, हर मुसीबत के वक़्त ख़ास नमाज़ों से, क़ह़्त साली में नमाज़े इस्तिस्क़ा से और ख़ास मुसीबत के वक़्त नमाज़े ह़ाजत वग़ैरा से। चूंकि नमाज़ इन्सान को दुन्या से बे ख़बर कर के **अल्लाह** की त़रफ़ मुतवज्जेह कर देती है इस लिये इस की बरकत से दुन्या की मुश्किलें दिल से फ़रामोश हो (या'नी भुला दी) जाती हैं। "(साह़िबे) तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी" ने इस जगह बयान फ़रमाया कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के घर में फ़ाक़ा होता था और रात में कुछ मुलाह़ज़ा न फ़रमाते (या'नी कुछ न खाते) थे और भूक ग़लबा करती थी तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिद में तशरीफ़ ला कर नमाज़ में मश्ग़ूल होते थे। (तफ़्सीरे नई़मी, 1/299-300)

जब बेटे की वफ़ात की ख़बर मिली (ह़िकायत)

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا फ़रज़न्द (या'नी बेटे) की वफ़ात

की ख़बर सुन कर नमाज़ में मश्ग़ूल हो गए और इस को इतना दराज़ (या'नी त़वील) किया कि जब लोग दफ़्न कर के लौटे तब आप फ़ारिग़ हुए। लोगों ने इस की वज्ह पूछी तो आप ने फ़रमाया कि मुझे इस फ़रज़न्द (या'नी बेटे) से बहुत महब्बत थी, मैं इस की जुदाई का सदमा बरदाश्त न कर सकता था, लिहाज़ा नमाज़ में मश्ग़ूल हो कर इस सदमे से बे ख़बर हो गया और आप ने येही आयत ﴿وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और सब्र और नमाज़ से मदद चाहो﴾ पढ़ी ।

(तफ़्सीरे नईमी, 1/299-300)

जन्नत में नर्म नर्म बिछोनों के तख़्त पर आराम से बिठाएगी ऐ भाइयो ! नमाज़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मस्जिद की हवा ईमान की दुरुस्ती के लिये फ़ाएदे मन्द है

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान साहिब एक मक़ाम पर फ़रमाते हैं : नमाज़ मुसीबतों का बेहतरीन इलाज और रह़मतें ह़ासिल करने का आ'ला ज़रीआ़ है । नमाज़ से बदन की सफ़ाई, लिबास की पाकी, अख़्लाक़े पाकीज़ा, आख़िरत की उल्फ़त, दुन्या से बे रग़बती, रब से महब्बत ह़ासिल होती है बशर्ते कि हुज़ूरे क़ल्ब (या'नी दिली तवज्जोह) के साथ अदा हो। जैसे कि मुख़्तलिफ़ दवाओं में मुख़्तलिफ़ तासीरें हैं, ऐसे ही नमाज़ में येह तासीर है कि वोह बुराइयों और बदकारियों से बचाती है और जैसे कि पहाड़ों की हवा तन्दुरुस्ती के लिये मुफ़ीद ऐसे ही मस्जिद की हवा ईमान की दुरुस्ती के लिये फ़ाएदे मन्द, नमाज़ में एक ख़ास बात येह है कि येह इन्सान के ध्यान को बटा देती है या'नी दुन्या से एक दम ग़ाफ़िल कर के

रब की त़रफ़ मुतवज्जेह करती है जिस से इन्सान दुन्यवी ग़म भूल जाता है और फ़ारिग़ हो कर ऐसा मसरूर (या'नी ख़ुश) होता है कि फिर क़ल्ब में मुसीबत का ज़ियादा एह़सास नहीं होता, देखो ! मिस्री औ़रतों ने जमाले यूसुफ़ी (या'नी हुस्ने यूसुफ़) में महू़व (या'नी गुम) हो कर उंग्लियां काट लीं और उन्हें बिल्कुल तक्लीफ़ महसूस न हुई, बजाए हाए ! वाए ! करने के येह कहती रहीं कि ﴿مَا هٰذَا بَشَرًا ؕ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ ﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** "येह तो जिन्से बशर से नहीं येह तो नहीं मगर कोई मुअ़ज़्ज़ज़ फ़िरिश्ता।" (پ12، یوسف:31) (तफ़्सीरे नईमी, 2/78)

रह़मत के शामियानों में ख़ुश्बू के साथ साथ ठन्डी हवा चलाएगी ऐ भाइयो ! नमाज़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

नज़्अ़ में जल्वए मुस्त़फ़ा की लज़्ज़त

रब की क़सम ! अगर नज़्अ़ की ह़ालत में जमाले मुस्त़फ़ाई नसीब हो जाए तो उस वक़्त भी कोई तक्लीफ़ महसूस न हो बल्कि कैफ़िय्यत येह हो कि जान तो निकल रही हो और ज़बान पर येह जारी हो कि मौला ! तुम्हारे ख़द्दो ख़ाल (या'नी शक्लो सूरत) पर क़ुरबान ! तुम्हारे बाल के क़ुरबान ! तुम्हारी चाल के सदक़े ! तुम्हारे तबस्सुम के निसार ! صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ سَيِّدِ نَا مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ ।

(तफ़्सीरे नईमी, 2/78)

सकरात में गर रूए मुह़म्मद पे नज़र हो हर मौत का झटका भी मुझे फिर तो मज़ा दे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد